परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय संस्था
कार्य-पत्रक

हिंदी - कक्षा – दसवीं

पाठ – रस (मोड्यूल-2)

प्रश्न -1 निम्नलिखित काव्यपंक्तियों में रस की पहचान करें –

(क) राम के रूप निहारति जानकी, कंगन के नग की परछाई।
यातें सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही पल टारत नाहीं॥

(ख) जब धूम धाम से जाती है बारात किसी की सज-धज कर।
मन करता धक्का दे दूल्हे को, जा बैठूं घोड़े पर।
सपने मे ही मुझको अपनी, शादी होती दिखती हैं।
वरमाला ले दुल्हन बढ़ती, बस नींद तभी खुल जाती हैं।

(ग) वह खून कहो किस मतलब का
जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का
आ सके देश के काम नही॥

(घ) करि विलाप सब रोबहिं रानी।
महाविपति किमि जाइ बखानी।।
सुनि विलाप दुखद दुख लागा।
धीरज छूकर धीरज भागा॥

(ङ) सुनत लखन के वचन कठोरा।
परशु सुधारि धरेउ कर घोरा।
अब जनि दोष मोहि लोगू,
कटू वादी बालक वध जोगू॥

(च) अभी तो मुकुट बँधा था माथ
हुए कल ही हल्दी के हाथ।
खुले भी न थे लाज के बोल
खिले भी न चुम्बन-शून्य कपोल।

हाय! रूक गया यही संसार,
बना सिन्दूर अंगार॥

(छ) भूषन वसन विलोकत सिय के
प्रेम विवस मन कम्प, पुलक तनु नीरज नीर भये पिय के।

(ज) बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करें, भौंहनि हँ सें, देन नट जाय॥

(झ) कहा बन्दरिया ने बन्दर से, चलो नहायें गंगा।
बच्चों को छोडेंगे घर में, होने दो हुड़दंगा॥